ISSN - 2394-2266

सिपना शिक्षण प्रसारक मंडल, अमरावती द्वारा संचालित

कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

चिखलदरा, जिला-अमरावती

(नॅक द्वारा 'ब' श्रेणी प्राप्त) (CGPA:2.58)

एवं

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के तत्वावधान में

सार्थक उपलब्धि

मार्च ९-१०, २०१७

द्वि-दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं

महाराष्ट्र हिंदी परिषद का

२४ वाँ अधिवेशन

आधुनिक हिंदी साहित्य के विविध विमर्श

ISSN - 2394-2266

सिपना शिक्षण प्रसारक मंडल, अमरावती द्वारा संचालित

कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

चिखलदरा, जिला–अमरावती

(नॅक द्वारा 'ब' श्रेणी प्राप्त) (CGPA:2.58)

एवं

महाराष्ट्र हिंदी परिषद

के तत्वाव्धान में

सार्थक उपलब्धि

मार्च ९–१०, २०१७

द्वि-दिवसीय
राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं
महाराष्ट्र हिंदी परिषद का
२४ वाँ अधिवेशन

आधुनिक हिंदी साहित्य के विविध विमर्श

संपादक
डॉ. मधुकर खराटे

अतिथि संपादक
डॉ. संगीता नं. जगताप

क्र.	शीर्षक	संशोधक	पृष्ठ क्र.
६७	आधुनिक हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	सौ. मौसमी रितेश मिश्रा	१७१
६८	अछूत का बेटा : सामाजिक रुढियों पर व्यंग्य	चेतन सिंह	१७२
	आदिवासी विमर्श		
६९	आधुनिक हिंदी साहित्य में आदिवासी-विमर्श	प्रा.डॉ. शंकर बुंदेले	१७७
७०	मेलघाट के गवलियों के अबोल स्वर	डॉ. संगीता जगताप	१८०
७१	'जंगल के फूल' में आदिवासी जीवन	डॉ. अनिल साळुंखे	१८३
७२	आदिवासी समाज की संस्कृति एंव अस्मिता	प्रा. सुनील कुमार मावस्कर	१८४
७३	आदिवासी विमर्श	डॉ. रवींद्रनाथ माधव पाटील	१८७
७४	समकालीन हिन्दी कविता में दलित चिंतन	डॉ. संतोष विजय येरावार	१८९
७५	आदिवासी कोरकू जाति : नारी विमर्श	डॉ. शालिनी व. वाटाणे	१९२
७६	हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श	नलिनी शशिकांत पशीने	१९४
७७	आदिवासी चित्रकला लोककला और जीवन	कुणाल अशोकराव राजनेकर	१९८
७८	आदिवासी विमर्श	सौ. निता न. तंगडपल्लीवार	२०१
७९	कोरकू समुदाय के लोकगीतों में आदिवासी संस्कृति	पन्नालाल लक्ष्मण धुर्वे	२०२
८०	कब तक पुकारुँ में आदिवासी विमर्श	प्रा.व्ही.जी. राठोड	२०४
८१	आदिवासी विमर्श : स्वरुप, क्षेत्र और संवेदनाएं	प्रा. भास्कर शिवलाल राठोड	२०६
८२	समकालीन आदिवासी कविता में प्रतिरोध के नए तेवर	प्रा. कल्पना दुबे	२०८
८३	आदिवासी उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन संघर्ष	प्रा.डॉ. योगेश जी.पाटील	२११
८४	वैश्वीकरण और हिन्दी उपन्यास में चित्रित आदिवासियों का जीवन		२१३
८५	आदिवासी कलाओं में सौंदर्यानुभूति	डॉ. सुनिल रामलाल मावस्कर	२१६
८६	नक्सलवाद और आदिवासी	गिर्हे दिलीप लक्ष्मण	२१८
८७	आदिवासी विमर्श	प्रा.डॉ. एम.ए. पवार	२२०
	कृषक विमर्श		
८८	प्रेमचंद का परवश किसान	डॉ. अरुण घोगरे	२२३
८९	रामदरश मिश्र की कहानियों में कृषक विमर्श	डॉ. अमृत खाडपे	२२५
९०	जय गोस्वामी की कविताओं में किसान त्रासदी के अक्स	प्रा.डॉ. अशोक एम. पवार	२२९
९१	गोंड जनजाति के लोकगीतों में कृषक विमर्श	ठाकुर गोदावरी अजय सिंह	२३१
९२	जय गोस्वामी की कविताओं में किसान त्रासदी के अक्स	प्रा.डॉ. अशोक एम. पवार	२३४
९३	डॉ. हरिकृष्ण देवसरे के बाल कथा साहित्य में हास्य-व्यंग्य	आशिष पांडे	२३७
९४	आधुनिक हिंदी कविता में कृषक विमर्श की प्रासंगिकता	डॉ. ज्योति एन. मंत्री	२३९
	अन्यान्य विमर्श		
९५	सूचनात्मक बाल साहित्य	प्रा. आनंद बक्षी	२४३
९६	कृषक जीवन की दास्तान : भारतीय किसान	डॉ. प्रवीण दिगंबर देशमुख	२४५
९७	बाल-साहित्य विमर्श	प्रा. मालती बंसराज यादव	२४८
९८	वेश्याओं की मजबूरी और बेबसी का संवेदनात्मक चित्रण-आगामी अतीत	प्रा.डॉ. संजयकुमार शर्मा	२५१

समकालीन हिन्दी कविता में दलित चिंतन

डॉ. संतोष विजय येरावार

हिंदी विभाग प्रमुख, देगलूर महाविद्यालय,देगलूर

भारतीय समाज व्यवस्था चतुवर्णो में विभक्त है। ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रा प्रथम तीन वर्णो को समाज में गौरव मिलता था और आज भी मिलता है। अंतिम वर्ण जिसे शूद्र समझा जाता था उसके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था।उनका जीवन निरर्थक और दासतापूर्ण था। दलित वर्ग को उच्चवर्ग के अधिन होकर जीवन व्यतीत करना पडता था। अन्याय, अत्याचार, संत्रास, वेदना, और शोषण दलितो के जीवन के अविभाज्य घटक बन गए थे। दलितो की पीडा और वेदना को मुखर करने का कार्य हिन्दी कवितानें किया है।समता और मानवता की स्थापना करने का प्रयास हिन्दी कवितानें किया है। दलित साहित्य के संदर्भ में पुरषोत्तम सत्यप्रेमी कहते है ''दलित साहित्य में क्रांति एवं शाति का समन्वयकारी स्वरूप एवं उनकी रचनात्मकता से हमारा आशय उस सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति से है जो शिक्षित, संगठित एवं सघर्षरत व्यक्तिस्तर और समाज स्तर पर अपना दीपक आप बन की अत्मिक सचेतना को अपनाए। वह लिंग, जाति, वर्णभेद का अस्वीकार कर अस्पृश्यता, तिरस्कार, शोषण, उत्पीडन एवं यातना, अलगाववाद के हिमाचती ब्राम्हणवाद और उसके पक्षधर पारंम्पारिक समाज व्यवस्था के प्रति आक्रोश, विद्रोह की भावना से निषेध के आधारपर नये जनतांत्रिक समतावादी समाज की संरचना के निमित्त स्वातंत्रता, समानता, न्याय, एवं बंधुता के संवैधानिक मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में सृजनात्मक क्रांति चेतना के पथ पर सक्रियता से अग्रेसर हो। वस्तुत: दलित साहित्य संवेदना से विचार की ओर की सृजनात्मक क्रांतिचेतना का एक ऐसा साहित्य है जो मानव के लिए मानव की दासता, पराधीनता से मुक्ति के द्वार पर दस्तक देकर मानव मात्र की मानव के रूपमें मानव समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए सक्रिय संकल्पना है।''१

हिन्दी कवितामें दलीत जीवन की वास्तविकताओं को उघाडा है। शोषित, पीडित अछूत उपमानित, वंचित पक्ष की त्रासदी की कविता में सशक्त अभिव्यक्ती हुई है। समता, मानवता है और दलितो के स्वाभिमान की स्थापना करना कविता का उद्देश रहा है। हिन्दी की दलित कवितामें दलितो की जीवन की वास्तविकता को और भोगी हुई यातना को वाणी प्राप्त हुई है। ''दलित कविता, दलितजीवन के यथार्थ की कविता है, उसने दलित जीवन के हर क्षण, हरपीडा हर एक वेदना और क्रांति गर्भ संवेदना को साकार किया है। दलित कवि के सामने भाववेग में बहने के अनेक अवसर थे, क्योंकि उन्होंने जीवन की बडी घिनौनी तस्वीर देखी है, परन्तु उसकी कविता जीवन वस्तुगत यथार्थ को मुलाधार मानती है।''२ वर्णव्यवस्था के कारण जातीय असामनता और छुवाछुत को बढावा मिला जाति एवं संप्रदाय मानव से महत्वपूर्ण हो गए। जाति- पाँती के कारण विषमता, घृणा, तिरस्कार और विरोध बढने लगा इसी जातीयता का विरोध कर समता की स्थापना कवी करना चाहता है। व्यक्ती यह जाति से नही तो कर्म से बढा होता है परंतु जाति की जंजीरो ने कर्म को बौना और पंगु बना दिया है। जाति–, वर्ण यह केवल ढोंग, और पाखंड है जो मनुष्य को जाति के आधारपर कमजोर, निर्बल, असाहय और बेबस बना देता है। जाती के कारण मानव को मानव नही तो पशुतूल्य समझा जाता है।

''जाति आदिम सभ्यता का
नुकीला औजार है
जो सडक चले आदमी को
कर देती है छलनी कृकृकृ
न जाने किस हरामजादे ने
तुम्हारे गले में
डाल दिया है जाति का फंदा
जो न तुम्हे जीने देता, है न हमें।''३

भारतीय जातिगत संकिर्णता पर प्रहार करनेवाली यह कविता है। जातिगत प्रतिष्ठा व्यवस्था ने मनुष्य को महत्वहिन बना दिया है। इसलिए दलितों को अभाव में जिना पडता हैं। रोटि कपडा और मकान जैसी मुलभूत अवश्यकतावों की पुर्तता के लिए भी जीवन भर संघर्ष करना पडता हैं। गंदी बस्तियों में लाचारी भरा जीवन यापन करने को मजबुर होना पडता है।

''कभी सोचा है,
गंदे नाले के किनारे बसे
वर्णव्यवस्था के मारे लोग
इस तरह क्यों जीते हैं?
तुम पराये क्यों लगते हो उन्हें
कभी सोचा है?''४

वर्णव्यवस्था नें असमानता, संघर्ष, और घशणा को जन्म दिया हैं। वर्णव्यवस्था के कारन एक तरफ संपन्नता, वैभव, समश्द्धी और सुखसुविधाएँ हैं। तो दुसरी तरफ लाचारी, गरीबी, अन्याय, अत्याचार और दरिद्रता है। जातिगत भेद–भाव ने मानवीय मूल्यों को कुचला है। कर्म को बौना बना दिया है। रश्मीरथ में कर्ण के माध्यमसे कवि आक्रोश व्यक्त करते हैं।

''जाति–जाति रटते, जिनकी पूंजी केवल पाखण्ड
उपर सिर पर कनक–छत्र, भीतर काले के काले
शरमाते है नही जगत में जाति पूछने वाले।
मस्तक उँचा किये जाति का नाम लिए चलते हो,
पर अधर्ममय शोषण के बल से सुख में पलते हो।
अधर्म जातियों से थर–थर कांपते तुम्हारे प्राण।
छल से माँग लिया करते हो अंगूठे का दान।''५

जातिगत विषमता, एवं अस्पशशता के कारन दलितों का जीवन दिन–हिन बन गया हैं। सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक विसंगतियाँ एवं विकृतियों की सार्वत्रिकता पनपने लगी है। निर्धनता, अशिक्षा, और लाचारी नें दलितों को रोटी का मौताज बना दिया है। कवि धूमिल ने भुखमरी की समस्या कों उद्घाटित किया है।

''कुल रोटी तीन
खाने से पहले मुँह दुढबर,
पेट भर पानी पीता है, और लजाता है।
कुल रोटी तीन, पहले उसे चाली खाती है

फिर वह रोटी खाता है।''[६]

गरिबी के कारन दलित रोटि के लिए तडपते हैं। अपने परिवार का – भरन– पोषन भी बडी मुश्किलों से कर पाते हैं। निम्नजाति के होने के कारन वे दया के भी पात्र नहिं बन पाते यह वर्ग इतनी निर्धनता में जीवन यापन कर रहा है कि 'रोटी' सदृश्य नितांत नैसर्गिक आवश्यकता की प्रति पूर्ति में भी वह असमर्थ है। यहाँ दलित परिवारों की गरिबी, और बेबसी मूर्त हो उठी है। गगरी का खाली होना, कठवत का पेट न भरना, पैथन को भी काम में लेना, रोटी बनने के साथ–साथ बंटवारे का जोड–तोड चलना स्थिती की दयनीयता और दर्द को एक साथ व्यंजित कर जाते है।''[७]

''चौके में खोया हुया औरत के हाथ
कुछ भी नहीं देखते
वे केवल रोटी बेलते हैं और
बेलते रहते हैं
एक छोटा–सा जोड–भाग
गश खाती हुई आग के साथ–साथ
चलता है और चलता रहता है।
बडूक को एक छोटकू को आधा
परबत्ती बालकिशन आधे में आधा
कुल रोटी है।''[८]

दलित जीवन के आर्थिक स्थिति को उघाडती डॉ. सिंह की यह कविता

अंधेरे में चूल्हे पडे
सिसियाते ठंडक में
कई–कई दिन
यह सब दर्द करता महसूस
दिल से दिल लगाकर सुनता धडकने
जिसमें बसा हैं – दर्द का एक संसार।''[९]

समकालीन कविता में, दलितों की अभाव जन्य वेदना, निर्धनता, यातनाभरा जीवन, और सामाजिक विसंगतियों को उघाड है। धर्म, रीति–रिवाज, अंधविश्वास, अशिक्षा, पारंपारिक मान्यताओं के कारन भी दलितो के जीवन में घशणा, तिरस्कार और अपमान आया हैं। तिरस्कृत दृष्टिकोण सामाजिक असत्यता को बढावा देता है। धर्मिक अनुष्ठान, धार्मिक शोषित संडिगली मान्यताओं और साम्प्रदायिक विषमताओं पर कडा व्यंग्यबाण कसा है।

'ऋगवेद कहता है
ब्राम्हण ब्रम्हा के मुख से
क्षत्रिय भुजाओं से
वैश्य जांघो से और
शुद्र पैरे से पैदा हुआ है।
परंन्तु
विज्ञान कहता है गर्भधारण करना
महिलाओं का काम है।
और
संतान उत्पन्न होना
इसी का परिणाम है
पता नहीं फिर
ब्रम्हा ने कैसे
नारीत्व अपना लिया
एक नही, दो नही, चार–चार जगह
गर्भ धारण करा लिया
ब्राम्हणों ने
इस ढोंग का
फायदा उठा
दलित शोषितों को
अपना गुलाम बनालिया
यह ढोंग अब ज्यादा नहीं चलेगा
वेद स्मृतियों का कूडा करकट
अब–धू–धू जलेगा।''[१०]

समाज में धर्म के नामपर बंराई, असमानता और घशणा को स्थापित किया जा रहा हैं। परंन्तु धर्म के मानवीय रूप को, उघाडते हुए मानवता की स्थापना करने का और धर्म के वास्तविक रूप को समझाने का प्रयास कविता में किया गया है।

''धर्म
निंधारित करता है जीवन शैली
निर्देशित करता है श्रेष्ठ आचरण धर्म
धर्म जगाता है विवेक, उपजाता है करूणा
हिंसा से विरत करता है धर्म लाता है समता
उठाता है वह गिरे हुओं को
बंधुत्व की दिशा देता है धर्म
धर्म फैलाता है मैत्री
जतियाँ नही जन्माता, नहीं जन्माता पाखंड रूढियाँ
नहीं जन्माता नफरत
मनुष्यता के बीच
दीवार नही खडा करता धर्म''[११]

असमानता, विषमता और अस्पृश्यता को बढावा देनेवाली धार्मिक मान्यताओं को धर्म के ठेकेदारों ने बढावा दिया, उन्हे समाज और जनमानस में स्थापित किया परिनाम स्वरूप समाज में दलितों का शोषण, अन्याय, अत्याचार एवं घशणा पनपने और बढने लगी। दलितो को असपश्य अपवित्र माना जाने लगा, दलितों को धार्मिक सडगली शोषित मान्यताओं एवं विचारों के आधारपर अपमानित और तिरस्कृत किया जाने लगा। वर्णव्यवस्था ने मनुष्य को बॉट कर असमानता, को जन्म दिया परिनाम स्वरूप समाज में घशणा, तिरस्कार, विरोध, संघर्ष और यातना बढने लगी। डॉ बाबासाहेब आंबेडकर कहते है, ''धर्म के लिए आदमी है आदमी के लिए धर्म है। यह सवाल निश्चित रूप से सोचने योग्य है। नीति शुध्द आचरण रखने की जिम्मेदारी दृष्टि से धर्म के लिए मनुष्य है और समाज के हिंतो का सवाल जब पैदा होता है तब धर्म के लिए मनुष्य है और सारे समाज के हितों का सवाल

जब पैदा होता है। तब धर्म के लिए मनुष्य है, ऐसा कहा जा सकता है। लेकिन क्या धर्म के नाम पर चलनेवाले अधर्म के लिए, खास वर्ग के दासता में रहने के लिए, सदियों से अन्याय और जुल्य को बदार्सत करने के लिए ही मनुष्य का जन्म हुआ है मनुष्य के लिए धर्म है।'' इस विचारधारा का निर्वाह दलित कविता में दिखाई देता है दलितों के प्रताडित जीवन को वाणी प्रदान करने का कार्य हिन्दी कविता ने किया है। दलितों का अधिकारों, के प्रती सचेत कर उन्हे जागश्त करने का कार्य हिन्दी कवितां ने किया है। ६ र्म के नाम पर परोसे जा रहे कुरितियों को उघाडकर धर्म के वास्तविक रूप को उघाडा गया है। वास्तविकता में धर्म समता बंधुत्व, समर्पण, दया, और प्रेम को महत्व देता है। परंतु तथाकथित धर्मव्यवस्थाने धर्म के नाम पर केवल पाखंड, ढोग, आडंबर, घश्णा, तिरस्कार, असमानता, शोषन और विक्रतियों को बढावा दिया है। जिस कारन दलितों को अपना जीवन यातना, संत्रास और दुख में जीने के लिए मजबुर होना पडा दलितों की इस वास्तविकता कों और उच्चवर्ग की शोषित मानसिकता को हिन्दी कविता में प्रखरता से उघाडा गया, और मानवीय मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१.रमणिका गुप्ता, दलित चेतना साहित्य, पृ.– ७५

२.वही पृ. – १३३

३.युध्दरत आम आदमी – रमनिका गुप्ता पृ. १०

४.रमणिका गुप्ता, दलित चेतना साहित्य, पृ. – १२७

५.रश्मिरथी, दिनकर, पृ. ४

६.कल सुनना मुझे किस्स जनतंत्र का, धूमिल, पृ. १६

७.समकालीन हिन्दी कवितामें दलित चेतना, डॉ. सुमनसिंह, पृ. ९३

८. कल सुनना मुझे किस्सा जनतंत्र का, धूमिल, पृ. १६

९. वही, पृ. १६

१०. ईशगंगानिया, हार नही मानूँगा, पृ. १६–१७

११. सी. बी. भारती, आक्रोश, पृ. ३४

*****

जब पैदा होता है। तब धर्म के लिए मनुष्य है, ऐसा कहा जा सकता है। लेकिन क्या धर्म के नाम पर चलनेवाले अधर्म के लिए, खास वर्ग के दासता में रहने के लिए, सदियों से अन्याय और जुल्य को बदार्सृत करने के लिए ही मनुष्य का जन्म हुआ है मनुष्य के लिए धर्म है।'' इस विचारधारा का निर्वाह दलित कविता में दिखाई देता है दलितों के प्रताडित जीवन को वाणी प्रदान करने का कार्य हिन्दी कविता ने किया हैं। दलितों का अधिकारों, के प्रती सचेत कर उन्हे जागश्त करने का कार्य हिन्दी कवितां ने किया है। ६ र्म के नाम पर परोसे जा रहे कुरितियों को उघाडकर धर्म के वास्तविक रूप को उघाडा गया हैं। वास्तविकता में धर्म समता बंधुत्व, समर्पण, दया, और प्रेम को महत्व देता हैं। परंतु तथाकथित धर्मव्यवस्थाने धर्म के नाम पर केवल पाखंड, ढोग, आडंबर, घशणा, तिरस्कार, असमानता, शोषन और विक्रतियों को बढावा दिया हैं। जिस कारन दलितों को अपना जीवन यातना, संत्रास और दुख में जीने के लिए मजबुर होना पडा दलितों की इस वास्तविकता कों और उच्चवर्ग की शोषित मानसिकता को हिन्दी कविता में प्रखरता से उघाडा गया, और मानवीय मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१.रमणिका गुप्ता, दलित चेतना साहित्य, पृ.– ७५

२.वही पृ. – १३३

३.युध्दरत आम आदमी – रमनिका गुप्ता पृ. १०

४.रमणिका गुप्ता, दलित चेतना साहित्य, पृ. – १२७

५.रश्मिरथी, दिनकर, पृ. ४

६.कल सुनना मुझे किस्स जनतंत्र का, धूमिल, पृ. १६

७.समकालीन हिन्दी कवितामें दलित चेतना, डॉ. सुमनसिंह, पृ. ९३

८. कल सुनना मुझे किस्सा जनतंत्र का, धूमिल, पृ. १६

९. वही, पृ. १६

१०. ईशगंगानिया, हार नही मानूँगा, पृ. १६–१७

११. सी. बी. भारती, आक्रोश, पृ. ३४

*****